मादा पशुओं के गर्भधारण न करने पर पशुपालक दें विशेष ध्यान : डॉ. संजय

11/05/2021

कानपुर। सीएसए के दीवानी रोड नगला निरंजन स्थित कृषि विज्ञान केंद्र के पशुपालन वैज्ञानिक डॉ संजय कुमार पांडेय ने पशुपालकों के लिए एडवाइजरी जारी की है। डॉ. पांडेय ने बताया की किसान के लिए पशु महत्वपूर्ण धन होते हैं जिससे उन्हें पूरे वर्ष अतिरिक्त आमदनी प्राप्त होती रहती है। उन्होंने पशु पालकों को सलाह दी है की कोरोनावायरस संक्रमण के दौरान पशुपालक मादा पशु के गर्भ न धारण करने पर बार-बार गर्म होने पर विशेष ध्यान दें। उन्होंने बताया कि अक्सर यह देखा गया है कि मादा पशु नियमित रूप से लगभग 21 दिनों के अंतराल में हर बार हीट या गर्मी में तो आती है परंतु कई बार उसका कृत्रिम गर्भाधान करवाने के बाद भी वह गर्भधारण नहीं कर पाती । यदि मादा पशु तीन बार से अधिक कृत्रिम गर्भाधान करवाने के बाद भी गर्भ नहीं ठहरता है तो उसे पशुपालन विज्ञान की भाषा में बारंबार प्रजनन कहते हैं। माता पशु के बार-बार गर्म होने पर इसके कारणों पर उन्होंने विस्तार से जानकारी दी उन्होंने बताया कि बच्चेदानी में संक्रमण होना अर्थात तोड़े या मैले में मवाद के छोटे-छोटे कण अथवा उसमें पीलापन होना।,शरीर में हारमोंस की कमी होना।,सही समय पर मादा पशु का कृत्रिम गर्भाधान न होना।,पशु आहार में आवश्यक तत्वों जैसे कि खनिज लवण इत्यादि की कमी होना।,मादा पशु की बच्चेदानी में जन्मजात विकार होना जैसे कि अंड वाहिनी का बंद होना।,हिमीकृत वीर्य का अनुचित रखरखाव । मादा पशुओं में इस रोग की रोकथाम एवं उपचार के बारे में

डॉक्टर संजय पांडे ने पशुपालकों को बताया कि सबसे पहले मादा पशुओं ने जो तोड़ा या मैला गिराया है उसे ध्यानपूर्वक देखें यदि उसमें पीलापन या मवाद के छोटे-छोटे कण हैं तो उसकी बच्चेदानी की सफाई करवाना आवश्यक है क्योंकि मवाद और शुक्राणु अर्थात वीर्य एक दूसरे के दुश्मन हैं यदि बच्चेदानी में मवाद है या संक्रमण है तो मादा पशु गाभिन नहीं हो पाएगी। डॉक्टर पांडे ने इसके उपचार हेतु बच्चेदानी की सफाई कृत्रिम गर्भाधान गन द्वारा 150-200 द्व्य नॉरमल सलाइन अर्थात एनएस द्वारा करवाएं। एवं उसके बाद बच्चेदानी की सफाई 1न्न ख्द्दद्दशद्य%द्य द्धशस्त्रद्धठ्ठद्ग (ल्यूगोल आयोडीन) नामक घोल छुड़वा कर करवानी चाहिए, जो कि 2 मिलीलीटर ल्यूगोल आयोडीन को 198 मिलीलीटर डिस्टल वाटर में घोलकर तैयार करके कर सकते हैं। यदि द्यह्वद्दशद्यद्य द्धशस्त्रद्धठ्ठद्ग उपलब्ध नहीं है तो उसके स्थान पर ड्डद्गह्लड्डस्त्रद्धठ्ठद्ग (बीटाडीन) नामक घोल का इस्तेमाल कर सकते हैं तथा उस बार की हीट छोड़ देनी चाहिए । अगली हीट में यदि मादा पशु का मैला या तोड़ा साफ है तभी उसकी एआई करवानी चाहिए है। उन्होंने बताया कि पशुओं का दाना चारा पोषक तत्वों से भरपूर होना चाहिए एवं उसमें सभी प्रकार के घटकों का उचित मात्रा में समावेश होना चाहिए। उन्होंने पशुपालकों को यह भी सलाह दी कि मादा पशु यदि सुबह हीट में आया है तो उसकी कृत्रिम गर्भाधान उसी दिन शाम को करवा लेनी चाहिए और इसके विपरीत यदि शाम को हीट अथवा गर्मी में है तो उसकी कृत्रिम गर्भाधान अगले दिन सुबह अवश्य करवा लेनी चाहिए। उन्होंने पशुपालकों से अपील की है कि वह ध्यान रखें कि कृत्रिम गर्भाधान कर्मी अथवा एआई करने वाला पशु मित्र हिमीकृत वीर्य का रख-रखाव तरल नत्रजन (लिक्विड नाइट्रोजन गैस) में ठीक प्रकार से कर रहा है या नहीं। कभी-कभी हिमीकृत वीर्य के रखरखाव में कमी के कारण उसकी गुणवत्ता खराब हो जाती है।जिसके कारण मादा पशु गर्भधारण नहीं कर पाते। उन्होंने कहा कि यदि उपरोक्त सारी चीजें ठीक है तो कृत्रिम गर्भाधान के साथ-साथ हार्मोन जैसे रिसेप्टल, कोरूलोन इत्यादि के इंजेक्शन भी कारगर देखे गए हैं, परंतु यदि पशु का खानपान एवं शरीर भार ठीक है तभी हार्मोन के इंजेक्शन सफल हो पाते हैं अन्यथा नहीं। उन्होंने पशुपालकों से अपील की है कि इसके अतिरिक्त समय समय पर पशु चिकित्सक की सलाह लेना अति आवश्यक है।

वर्ष-8 अंक-78 कानपुर, मंगलवार 11 मई 2021 पृष्ठ-8

कानपुर से प्रकाशित

दैनिक

आज का कानपुर

इ.के.के न्यूज "सत्य का आधार"

डाक पंजीयन संख्या : K.P.City-323/2018-20

RNI No : UPHIN/2014/55306

कानपुर से प्रकाशित लखनऊ, उन्नाव, सीतापुर, लखीमपुर खीरी, हमीरपुर, महोबा, बांदा, फतेहपुर, प्रयागराज, इटावा, कन्नौज, गाजीपुर, कानपुर देहात, बाराबंकी में प्रसारित

aajkakanpur.in facebook aajkakanpur twitter aajkakanpur 9389981028 Gmail aajkakanpur@gmail.com aajkakanpur

मादा पशुओं के गर्भधारण न करने पर पशुपालक दें ध्यान-डॉ. पांडेय

आज का कानपुर

कानपुर।चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर डी.आर. सिंह द्वारा कृषि वैज्ञानिकों को जारी निर्देश के क्रम में आज दिनांक 10 मई 2021 को दीवानी रोड नगला निरंजन स्थित कृषि विज्ञान केंद्र के पशुपालन वैज्ञानिक डॉ संजय कुमार पांडेय ने पशुपालकों के लिए एडवाइजरी जारी की है। डॉक्टर पांडेय ने बताया की किसान भाइयों के लिए पशु महत्वपूर्ण धन होते हैं जिससे उन्हें पूरे वर्ष अतिरिक्त आमदनी प्राप्त होती रहती है। उन्होंने पशु पालकों को सलाह दी है की कोरोनावायरस संक्रमण के दौरान पशुपालक भाई मादा पशु के गर्भ न धारण करने पर बार-बार गर्म होने पर विशेष ध्यान दें। उन्होंने बताया कि अक्सर यह देखा गया है कि मादा पशु नियमित रूप से लगभग 21 दिनों के अंतराल में हर बार हीट या गर्मी में तो आती है परंतु कई बार उसका कृत्रिम गर्भाधान करवाने के बाद भी वह गर्भधारण नहीं कर पाती। यदि मादा पशु तीन बार से अधिक कृत्रिम गर्भाधान करवाने के बाद भी गर्भ नहीं ठहरता है तो उसे पशुपालन विज्ञान की भाषा में बारंबार प्रजनन या रिपीट ब्रीडर कहते हैं। मादा पशु के बार-बार गर्म होने पर इसके कारणों पर उन्होंने विस्तार से जानकारी दी उन्होंने बताया कि बच्चेदानी में संक्रमण होना अर्थात तोड़े या मैले में मवाद के छोटे-छोटे कण अथवा उसमें पीलापन होना,शरीर में हार्मोंस की कमी होना,सही समय पर मादा पशु का कृत्रिम गर्भाधान न होना,पशु आहार में आवश्यक तत्वों जैसे कि खनिज लवण इत्यादि की कमी होना,मादा पशु की बच्चेदानी में जन्मजात विकार होना जैसे कि अंड वाहिनी का बंद होना,हिमीकृत वीर्य का अनुचित रखरखाव। मादा पशुओं में इस रोग की रोकथाम एवं उपचार के बारे में डॉक्टर संजय पांडे ने पशुपालकों को बताया कि सबसे पहले मादा पशुओं ने जो तोड़ा या मैला गिराया है उसे ध्यानपूर्वक देखें यदि उसमें पीलापन या मवाद के छोटे-छोटे कण हैं तो उसकी बच्चेदानी की सफाई करवाना आवश्यक है क्योंकि मवाद और शुक्राणु अर्थात वीर्य एक दूसरे के दुश्मन हैं यदि बच्चेदानी में मवाद है या संक्रमण है तो मादा पशु गाभिन नहीं हो पाएगी। डॉक्टर पांडे ने इसके उपचार हेतु बच्चेदानी की सफाई कृत्रिम गर्भाधान गन द्वारा 150-200 द्वय नॉरमल सलाइन अर्थात एनएस द्वारा करवाएं।

एवं उसके बाद बच्चेदानी की सफाई v% Lugol's Iodine (ल्यूगोल आयोडीन) नामक घोल छुड़वा कर करवानी चाहिए, जो कि 2 मिलीलीटर ल्यूगोल आयोडीन को 198 मिलीलीटर डिस्टल वाटर में घोलकर तैयार करके कर सकते हैं। यदि lugols iodine उपलब्ध नहीं है तो उसके स्थान पर [illegible] (पोवाडीन) नामक घोल का इस्तेमाल कर सकते हैं तथा उस बार की हीट छोड़ देनी चाहिए। अगली हीट में यदि मादा पशु का मैला या तोड़ा साफ है तभी उसकी एआई करवानी चाहिए है। उन्होंने बताया कि पशुओं का दाना चारा पोषक तत्वों से भरपूर होना चाहिए एवं उसमें सभी प्रकार के घटकों का उचित मात्रा में समावेश होना चाहिए। उन्होंने पशुपालकों को यह भी सलाह दी कि मादा पशु यदि सुबह हीट में आया है तो उसकी कृत्रिम गर्भाधान उसी दिन शाम को करवा लेनी चाहिए और इसके विपरीत यदि शाम को हीट अथवा गर्मी में है तो उसकी कृत्रिम गर्भाधान अगले दिन सुबह अवश्य करवा लेनी चाहिए। उन्होंने पशुपालकों से अपील की है कि वह ध्यान रखें कि कृत्रिम गर्भाधान कर्मी अथवा एआई करने वाला पशु मित्र हिमीकृत वीर्य का रख-रखाव तरल नत्रजन (लिक्विड नाइट्रोजन गैस) में ठीक प्रकार से कर रहा है या नहीं। कभी-कभी हिमीकृत वीर्य के रखरखाव में कमी के कारण उसकी गुणवत्ता खराब हो जाती है।जिसके कारण मादा पशु गर्भधारण नहीं कर पाते। उन्होंने कहा कि यदि उपरोक्त सारी चीजें ठीक है तो कृत्रिम गर्भाधान के साथ-साथ हार्मोन जैसे रिसेप्टल, कोरूलीन इत्यादि के इंजेक्शन भी कारगर देखे गए हैं, परंतु यदि पशु का खानपान एवं शरीर भार ठीक है तभी हार्मोन के इंजेक्शन सफल हो पाते हैं अन्यथा नहीं। उन्होंने पशुपालकों से अपील की है कि इसके अतिरिक्त समय समय पर पशु चिकित्सक की सलाह लेना अति आवश्यक है

कपड़ा बाजार में फंसा अरबों का माल, सहालग के समय

आज का कानपुर

कानपुर।पिछले वर्ष की तरह एक बार फिर कोरोना ने कपड़ा बाजार की कमर तोड़ दी है। सूरत, मुंबई, अहमदाबाद से कपड़ा खरीद कर गोदामों में रखकर बैठे कारोबारी बुरी तरह परेशान हैं। इसके साथ ही आसपास के जिलों में जहां कानपुर से ही कपड़ा, साड़ी जाती है, वहां भी दुकानदार परेशान हैं क्योंकि उन्हें भी कपड़ा नहीं मिल पा रहा है।गर्मियों की सहालग कपड़ा बाजार के लिए सबसे महत्वपूर्ण होती है। गंगा मेला के बाद बाजार खुलते ही बिक्री शुरू हो जाती है। यह बिक्री इसके बाद तब तक चलती रहती है जब तक की गर्मी की सहालग चलती है। सामान्यतौर पर यह जून के अंत या जुलाई की शुरुआत तक होती है। ग्रामीण क्षेत्रों में फसल कटने के बाद लोगों की हाथ में नकदी होती है, इसलिए ज्यादातर लोग गर्मियों में ही परिवार के वैवाहिक कार्यक्रम तय करते हैं। इस बार भी गंगा मेला के बाद कपड़ा बाजार शुरू हुआ तो रोज 50 करोड़ रुपये के आसपास की की बिक्री हो रही थी। कोरोना संक्रमितों की संख्या बढ़ने के दौरान भी सहालग और ईद को लेकर बिक्री तेज थी लेकिन पहले संगठन की तरह से बंदी और बाद में शासन की तरफ से लगे कर्फ्यू ने बाजार की कमर तोड़ दी।एक मई से बंद हुआ बाजार दोबारा अभी तक नहीं खुला है। सहालग के दिन जैसे-जैसे गुजरते जा रहे हैं, कारोबारियों के माथे पर चिंता की लकीरें बढ़ती जा रही हैं। सहालग में अच्छी बिक्री की उम्मीद से जो सामान लाकर सजाया गया था वह वैसे ही पड़ा है। गंगा मेला

हिन्दी दैनिक

R.N.I.No-UPHIN/2012/42725

हिन्दुस्तान का इतिहास

कानपुर से प्रकाशित

23 ● कानपुर मंगलवार 11 मई 2021 - पृष्ठ: 8 - मूल्य: 1.00 रु.

मादा पशुओं के गर्भधारण न करने पर पशुपालक दें विशेष ध्यान-डॉ संजय कुमार पाडेय

कानपुर- चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर डी.आर. सिंह द्वारा कृषि वैज्ञानिकों को जारी निर्देश के क्रम में दीवानी रोड नगला निरंजन स्थित कृषि विज्ञान केंद्र के पशुपालन वैज्ञानिक डॉ संजय कुमार पाडेय ने पशुपालकों के लिए एडवाइजरी जारी की है डॉ पाडेय ने बताया की किसान भाइयों के लिए पशु महत्वपूर्ण धन होते हैं जिससे उन्हें पूरे वर्ष अतिरिक्त आमदनी प्राप्त होती रहती है उन्होंने पशु पालकों को सलाह दी है की कोरोना-वायरस संक्रमण के दौरान पशुपालक भाई मादा पशु के गर्भ न धारण करने पर बार-बार गर्म होने पर विशेष ध्यान दें उन्होंने बताया कि अक्सर यह देखा गया है कि मादा पशु नियमित रूप से लगभग 21 दिनों के अंतराल में हर बार हीट या गर्मी में तो आती है परंतु कई बार उसका कृत्रिम गर्भाधान करवाने के बाद भी वह गर्भधारण नहीं कर पाती यदि मादा पशु तीन बार से अधिक कृत्रिम गर्भाधान करवाने के बाद भी गर्म नहीं ठहरता है तो उसे पशुपालन विज्ञान की भाषा में बारंबार प्रजनन या रिपीट ब्रीडर कहते हैं माता पशु के बार-बार गर्म होने पर इसके कारणों पर उन्होंने विस्तार से जानकारी दी उन्होंने बताया कि बच्चे-दानी में संक्रमण होना अर्थात तोड़े या मैले में मवाद के छोटे-छोटे कण अथवा उसमें पीलापन होना शरीर में हारमोंस की कमी होना सही समय पर मादा पशु का कृत्रिम गर्भाधान न होना, पशु आहार में आवश्यक तत्वों जैसे कि खनिज लवण इत्यादि की कमी होना मादा पशु की बच्चेदानी में जन्मजात विकार होना जैसे कि अंड वाहिनी का बंद होना हिमीकृत वीर्य का अनुचित रखरखाव मादा पशुओं में इस रोग की रोकथाम एवं उपचार के बारे में डॉ संजय पांडे ने पशुपालकों को बताया कि सबसे पहले मादा पशुओं ने जो तोड़ा या मैला गिराया है उसे ध्यानपूर्वक देखें यदि उसमें पीलापन या मवाद के छोटे-छोटे कण हैं तो उसकी बच्चेदानी की सफाई करवाना आवश्यक है क्योंकि मवाद और शुक्राणु अर्थात वीर्य एक दूसरे के दुश्मन हैं यदि बच्चेदानी में मवाद है या संक्रमण है तो मादा पशु गाभिन नहीं हो पाएगी डॉ पाडे ने इसके उपचार हेतु बच्चेदानी की सफाई कृत्रिम गर्भाधान गन द्वारा 150-200 एमएल नॉरमल सलाइन अर्थात एनएस द्वारा करवाएं एवं उसके बाद बच्चेदानी की सफाई 1ल (ल्यूगोल आयोडीन) नामक घोल घुड़वा कर करवानी चाहिए, जो कि 2 मिलीलीटर ल्यूगोल आयोडीन को 198 मिलीलीटर डिस्टल वाटर में घोलकर तैयार करके कर सकते हैं यदि ल्यूगोल आयोडीन उपलब्ध नहीं है तो उसके स्थान पर बीटाडीन नामक घोल का इस्तेमाल कर सकते हैं तथा उस बार की हीट छोड़ देनी चाहिए अगली हीट में यदि मादा पशु का मैला या तोड़ा साफ है तभी उसकी एआई करवानी चाहिए है उन्होंने बताया कि पशुओं का दाना चारा पोषक तत्वों से भरपूर होना चाहिए एवं उसमें सभी प्रकार के घटकों का उचित मात्रा में समावेश होना चाहिए उन्होंने पशुपालकों को यह भी सलाह दी कि मादा पशु यदि सुबह हीट में आया है तो उसकी कृत्रिम गर्भाधान उसी दिन शाम को करवा लेनी चाहिए और इसके विपरीत यदि शाम को हीट अथवा गर्मी में है तोउसकी कृत्रिम गर्भाधान अगले दिन सुबह अवश्य करवा लेनी चाहिए। उन्होंने पशुपालकों से अपील की है कि वह ध्यान रखें कि कृत्रिम गर्भाधान कर्मी अथवा एआई करने वाला पशु मित्र हिमीकृत वीर्य का रख-रखाव तरल नत्रजन (लिक्विड नाइट्रोजन गैस) में ठीक प्रकार से कर रहा है या नहीं कभी-कभी हिमीकृत वीर्य के रखरखाव में कमी के कारण उसकी गुणवत्ता खराब हो जाती है जिसके कारण मादा पशु गर्भधारण नहीं कर पाते उन्होंने कहा कि यदि उपरोक्त सारी चीजें ठीक है तो कृत्रिम गर्भाधान के साथ-साथ हार्मोन जैसे रिसेप्टल, कोरुलोन इत्यादि के इंजेक्शन भी कारगर देखे गए हैं परंतु यदि पशु का खानपान एवं शरीर भार ठीक है तभी हार्मोन के इंजेक्शन सफल हो पाते हैं अन्यथा नहीं उन्होंने पशुपालकों से अपील की है कि इसके अतिरिक्त समय समय पर पशु चिकित्सक की सलाह लेना अति आवश्यक है।

सहजन की पत्तियां बढ़ातीं हैं रोग प्रतिरोधक क्षमता

11/05/2021 अमर उजाला कानपुर देहात

फली व फूल भी होते पोषक तत्वों से भरपूर

संवाद न्यूज एजेंसी

शिवली। रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में सहजन की पत्तियां बेहद कारगर हैं। सब्जी, दाल के साथ पकाकर इन्हें खाया जाता है। वहीं, सहजन की फली व फूल पोषक तत्वों से भरपूर होते हैं। ये बातें कृषि विज्ञान केंद्र के अध्यक्ष डॉ. अशोक कुमार ने सोमवार को अनूपपुर गांव में बताईं। उन्होंने किसानों को सहजन की फलियां भी वितरित कीं।

उन्होंने कहा कि कोरोना वायरस से बचाव के लिए शरीर की प्रतिरोधक क्षमता मजबूत होनी चाहिए। सहजन में प्रचुर मात्रा में विटामिन, मिनरल, प्रोटीन व एंटी ऑक्सीडेंट्स पाए जाते हैं, इसीलिए सहजन को सुपर फूड भी कहा जाता है।

अनूपपुर में कृषि वैज्ञानिकों ने 70 किसानों को सहजन की फलियां वितरित की। इसके अलावा दिलीप नगर केंद्र पर आने वाले ग्रामीणों को भी सहजन की फलियां वितरित की जा रही हैं। लोगों को सहजन का पेड़ घर में लगाना चाहिए। कृषि वैज्ञानिक डॉ. अरविंद कुमार व डॉ. राजेश राय भी मौजूद रहे।

सहजन की फलियां तुड़वाते कृषि वैज्ञानिक। संवाद

संतरे के मुकाबले सात गुना अधिक विटामिन सी

सहजन में संतरे के मुकाबले सात गुना ज्यादा विटामिन सी होता है। कृषि वैज्ञानिक डॉ. अरविंद कुमार ने बताया कि सहजन में केले के मुकाबले 14 गुना ज्यादा पोटेशियम पाया जाता है। गाजर की तुलना में 10 गुना ज्यादा बीटा-कैरोटीन होता है। यह आंखों, त्वचा के लिए अच्छा है। दूध के मुकाबले 17 गुना ज्यादा कैल्सियम और पालक के मुकाबले 25 गुना ज्यादा आयरन पाया जाता है।

बकरी के दूध से बढ़ती प्रतिरोधक क्षमता

शिवली। बकरी का ढाई सौ ग्राम दूध रोजाना पीने से रोग प्रतिरोधी क्षमता बढ़ती है। इससे इम्युनिटी सिस्टम भी मजबूत होता है। साथ ही कोरोना वायरस से लड़ने की क्षमता को भी बढ़ती है। यह दावा दिलीप नगर कृषि विज्ञान केंद्र के पशुपालन वैज्ञानिक डॉ. चंद्रकेश राय ने किया है।

उनका कहना है कि 2004 में एक रिसर्च के दौरान फेफड़ों से संबंधित बीमारियों के इलाज में भी बकरी के दूध का प्रयोग सफल माना गया था। इसके सेवन से खून में प्लेटलेट्स की संख्या में भी इजाफा होता है।

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉ. डीआर सिंह के निर्देश पर कोविड-19 की दूसरी लहर के संक्रमण से जूझ रहे लोगों के लिए एडवाइजरी जारी की है। डॉ. राय ने बताया कि कोरोना वायरस का प्रकोप उन लोगों में ज्यादा हो रहा है। जिनकी रोग प्रतिरोध क्षमता कम है। रोग से बचाव के लिए भारत सरकार के आयुष मंत्रालय लोगों को प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने पर जोर दे रहा है। (संवाद)

111 (1).pdf - Read-only

शाश्वत टाइम्स

हिन्दी दैनिक

वर्ष : 6, अंक : 40 पृष्ठ : 12
कानपुर महानगर, मंगलवार
11 मई, 2021
मूल्य ₹ 2.00

www.shashwattimes.com

मादा पशुओं के गर्भधारण न करने पर पशुपालक दें विशेष ध्यान : डॉ संजय कुमार पांडेय

शाश्वत टाइम्स कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर डी.आर. सिंह द्वारा कृषि वैज्ञानिकों को जारी निर्देश के क्रम में सोमवार को दीवानी रोड नगला निरंजन स्थित कृषि विज्ञान केंद्र के पशुपालन वैज्ञानिक डॉ संजय कुमार पांडेय ने पशुपालकों के लिए एडवाइजरी जारी की है। डॉक्टर पांडेय ने बताया की किसान भाइयों के लिए पशु महत्वपूर्ण धन होते हैं जिससे उन्हें पूरे वर्ष अतिरिक्त आमदनी प्राप्त होती रहती है। उन्होंने पशु पालकों को सलाह दी है की कोरोनावायरस संक्रमण के दौरान पशुपालक भाई मादा पशु के गर्भ न धारण करने पर बार-बार गर्म होने पर विशेष ध्यान दें। उन्होंने बताया कि अक्सर यह देखा गया है कि मादा पशु नियमित रूप से लगभग 21 दिनों के अंतराल में हर बार हीट या गर्मी में तो आती है परंतु कई बार उसका कृत्रिम गर्भाधान करवाने के बाद भी वह गर्भधारण नहीं कर पाती। यदि मादा पशु तीन बार से अधिक कृत्रिम गर्भाधान करवाने के बाद भी गर्भ नहीं ठहरता है तो उसे पशुपालन विज्ञान की भाषा में बार-बार प्रजनन या रिपीट

ब्रीडर कहते हैं। मादा पशु के बार-बार गर्म होने पर इसके कारणों पर उन्होंने विस्तार से जानकारी दी उन्होंने बताया कि बच्चेदानी में संक्रमण होना अर्थात तोड़े या मैले में मवाद के छोटे-छोटे कण अथवा उसमें पीलापन होना,(शरीर में हारमोंस की कमी होना,(सही समय पर मादा पशु का कृत्रिम गर्भाधान न होना,(पशु आहार में आवश्यक तत्वों जैसे कि खनिज लवण इत्यादि की कमी होना,(मादा पशु की बच्चेदानी में जन्मजात विकार होना जैसे कि अंड वाहिनी का बंद होना,(हिमीकृत वीर्य का अनुचित रखरखाव। मादा पशुओं में इस रोग की रोकथाम एवं उपचार के बारे में डॉक्टर संजय पांडे ने पशुपालकों को बताया कि सबसे पहले मादा पशुओं ने जो तोड़ा या मैला गिराया है उसे ध्यानपूर्वक देखें यदि उसमें पीलापन या मवाद के छोटे-छोटे कण हैं तो उसकी बच्चेदानी की सफाई करवाना आवश्यक है क्योंकि मवाद और शुक्राणु अर्थात वीर्य एक दूसरे के दुश्मन हैं यदि बच्चेदानी में मवाद है या संक्रमण है तो मादा पशु गाभिन नहीं हो पाएगी। डॉक्टर पांडे ने इसके उपचार हेतु बच्चेदानी की सफाई कृत्रिम गर्भाधान गन द्वारा 150-200 ml नॉरमल सलाइन अर्थात एनएस द्वारा करवाएं। एवं उसके बाद बच्चेदानी की सफाई 1 प्रतिशत Lugol's Iodine (ल्यूगोल आयोडीन) नामक घोल सुइया

कर करवानी चाहिए, जो कि 2 मिलीलीटर ल्यूगोल आयोडीन को 198 मिलीलीटर डिस्टल वाटर में घोलकर तैयार करके कर सकते हैं। यदि lugols iodine उपलब्ध नहीं है तो उसके स्थान पर Betadine (बीटाडीन) नामक घोल का इस्तेमाल कर सकते हैं तथा उस बार की हीट छोड़ देनी चाहिए। अगली हीट में यदि मादा पशु का मैला या तोड़ा साफ है तभी उसकी एआई करवानी चाहिए है। उन्होंने बताया कि पशुओं का दाना चारा पोषक तत्वों से भरपूर होना चाहिए एवं उसमें सभी प्रकार के घटकों का उचित मात्रा में समावेश होना चाहिए। उन्होंने पशुपालकों को यह भी सलाह दी कि मादा पशु यदि सुबह हीट में आया है तो उसकी कृत्रिम गर्भाधान उसी दिन शाम को करवा लेनी चाहिए और इसके विपरीत यदि शाम को हीट अथवा गर्मी में है तो उसकी कृत्रिम गर्भाधान अगले दिन सुबह अवश्य करवा लेनी चाहिए। उन्होंने पशुपालकों से अपील की है कि वह ध्यान रखें कि कृत्रिम गर्भाधान कर्मी अथवा एआई करने वाला पशु मित्र हिमीकृत वीर्य का रख-रखाव तरल नत्रजन (लिक्विड नाइट्रोजन गैस) में ठीक प्रकार से कर रहा है या नहीं। कभी-कभी हिमीकृत वीर्य के रखरखाव में कमी के कारण उसकी गुणवत्ता खराब हो जाती है।जिसके कारण मादा पशु गर्भधारण नहीं कर पाते। उन्होंने कहा कि यदि उपरोक्त सारी चीजें ठीक है तो कृत्रिम गर्भाधान के साथ-साथ हार्मोन जैसे रिसेप्टल, कोरूलोन इत्यादि के इंजेक्शन भी कारगर देखे गए हैं, परंतु यदि पशु का खानपान एवं शरीर भार ठीक है तभी हार्मोन के इंजेक्शन सफल हो पाते हैं अन्यथा नहीं। उन्होंने पशुपालकों से अपील की है कि इसके अतिरिक्त समय समय पर पशु चिकित्सक की सलाह लेना अति आवश्यक है।